

जकड़न (प्रथम दिवस)

रात्रि सत्र	समय 8.30 से 9.30	
गतिविधियां	अवधि	अपेक्षित परिणाम
सुगमकर्ता द्वारा बोध कथा बैसाखियों का किस्सा का वाचन	5 मिनट	प्रतिभागी बोध कथा को ध्यान से सुन सकेंगे।
प्रतिभागियों द्वारा मौन चिंतन	5 मिनट	प्रतिभागी बोध कथा में छिपे संदेश को समझ सकेंगे।
चिंतन मनन के प्रश्न (1 से 4 पर क्रम से सुगमकर्ता चर्चा करेंगे।)	40 मिनट	प्रतिभागी प्रश्नों पर आधारित अपने अनुभव को साझा करेंगे।
सुगमकर्ता प्रमुख संदेश को उभारेंगे	10 मिनट	

गतिविधि का संचालन कैसे करें ?

विधि :- बड़े समूह में चर्चा (समग्र)

सुझाए गए चरण :-

- सुगमकर्ता, बोध कथा, “बैसाखियों का किस्सा” पढ़कर सुनायें।
- उसके बाद सुगमकर्ता संस्थाप्रधान को चिंतन करने का समय देकर उससे उत्पन्न समझ पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों पर प्रतिक्रिया देने को कहे।

चिंतन के प्रश्न :-

1. यह बोध कथा क्या संदेश दे रही है ?
2. जब कोई बदलाव का प्रयत्न करता है, तब हमारा क्या रवैया होता है ?
3. सकारात्मक बदलाव को भी लोग पसन्द क्यों नहीं करते ?
4. इस तरह का आपका कोई अनुभव हो तो बताइए।

प्रमुख संदेश :-

जो बात पीढ़ियों से मानी जा रही है, उसे बदलने की बात करने वालों को मदद एवं सहायता की जरूरत है नकि उसका मजाक उड़ाया जाये।

संस्थाप्रधान रहते हुए ऐसी जकड़न का सामना अक्सर होता है। स्वयं से तथा अपने साथियों की ओर से एक कुशल नेतृत्वकर्ता में यह गुण हो कि वह सकारात्मक परिवर्तन के लिए सभी साथियों को अभिप्रेरित कर सके और स्वयं भी ऐसे परिवर्तन के लिए

तैयार रहे। यद्यपि प्रत्येक में अपनी आंतरिक उत्प्रेरणाएँ होती हैं, जिन्हें वह क्रियाशील करना चाहता है, लेकिन उत्प्रेरणाएँ अधिकतर शिथिल रहती हैं। इसके साथ ही कुछ मानसिक अवरोध भी हम में समय के साथ दृढ़ होते चले जाते हैं। अतः मानसिक अवरोधों को दूर कर उत्प्रेरणाओं को गतिशील बनाना एक आवश्यकता भी है और चुनौती भी।

बैसाखियों का किस्सा

एक हादसे में गाँव का मुखिया अपनी टांगे खो बैठा। वह बैसाखियों के सहारे चलने लगा। सिर्फ चलता ही नहीं था, वह बैसाखियों के सहारे नाच भी लेता, करतब भी दिखाता। उसने अपने बच्चों को भी बैसाखियों की मदद से चलना सिखा दिया। तीसरी, चौथी पीढ़ी आते-आते हालात यह हुई कि गाँव में कोई भी बिना बैसाखियों के नहीं चलता था। एक दिन उसी गाँव के एक युवक ने कहा कि जब हमारे पास पैर हैं तो हम बैसाखियों के सहारे क्यों चलते हैं? गाँव के लोग इस युवक की हिम्मत और प्रश्न पर आश्चर्य कर रहे थे, उन्होंने सोचा, इसे सबक सिखाएं। युवक से कहा गया कि वह बिना बैसाखियों के चल कर दिखाये।

अगले रविवार को सुबह गाँव के सभी लोगों के सामने वह युवक कड़ककर सीधा खड़ा हुआ और बैसाखियाँ फेंक दी। एक दो कदम चला ही था कि धड़ामसे मुंह के बल गिरा। सभी खूब हँसे। युवक का मजाक बनाया। वे एक तरह से पुनर्आश्वस्त हुए कि दरअसल बिना बैसाखियों के चलना मुमकिन ही नहीं है।